अडधा आनानी टीकीट वांड। सुचीपत्र मंगावबुं.

श्री सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र.

पाठ तथा विधि सहित.

यथामति संशोधन करी सुधारो वधारो करी
स्थानकवासी जैनधर्मी भाइओने सारु

छपावी प्रसिद्ध करनार,

बालाभाइ छगनलाल शाह.

जैन धर्मनां पुस्तको वेचनार
ठे. कीकाभटनी पोळ—अमदावाद.

आवृत्ति आठमी　　　　प्रत ११००

अमदावाद ढींकवा चोकी पासे आवेला "शान्ति-
विजय" प्रि. प्रेसमां इश्वरलाल केशवलाल वकील
अने माणेकलाल माधवलाले छाप्युं.

संवत १९७५　　　　सने १९१९

किंमत चार आना.

दरेक पुस्तको व्याजबी कींमते मळशे.

पुस्तको कपाळ

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥श्री सामायिक प्रतिक्रमणादि सूत्र प्रारंभ ॥

॥ प्रथम पंचपरमेष्टिमंत्रो लिख्यते ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहुणं॥*

॥ अथ ❀तिक्खुत्तोनो पाठ ॥

---

* आ नीचेनो पाठ मारवाड विगेरे घणा गाममां नीचे मुजब नव नवकारथी गणाय छे तो जे जेनी आमन्या मुजब गणवा.

एसो पंच नमुक्कारो ॥ सव्व पावप्पणासणो ॥
मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥
ए मुजब नव पदथी गणाय छे.

❀ तिक्खुत्तोनो पाठ भगवती प्रमुख सूत्र मध्ये छे.

॥ तिरकुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं, करेमि, वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि; सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ अथ *अरिहंतो मह्देवोनो पाठ ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपण्णतं तत्तं, इह सम्मत्तं मए गहियं ॥१॥ पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउव्विह कसायमुक्को, इह अधरस गुणेहिं संजुत्तो ॥२॥ पंच महव्वयजुत्तो, पंचविहायार पालण समत्थेता ॥ पंच समिई तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्ज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ इरियावहिनो पाठ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ॥इरियावहियं

---

* आ पाठ मारवाड विगेरे घणा गाममां गणाय छे तो जे जेनी अमान्या मुजब करवुं.

पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउ ॥ इरिया वहियाए ॥ विराहणाए ॥ गमणागमणे ॥ पाणक्कमणे ॥ बीयक्कमणे ॥ हरियक्कमणे ॥ उसा-उत्तिंग ॥ पणगदग ॥ मट्टी मक्कडा ॥ संताणा संकमणे ॥ जे मे जीवा, विराहिया ॥ एगिंदिया॥ बेइंदिया ॥ तेइंदिया ॥ चउरिंदिया ॥ पंचिंदिया॥ अभिहया ॥ वत्तिया ॥ लेसिया ॥ संघाइया ॥ संघट्टिया॥ परियाविया॥ किलामिया॥ उद्दविया॥ ठाणाउठाणं संकामिया॥ जीवियाउ ववरोविया॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ध्यान लेवाना आगारनो पाठ ॥

॥ तस्सउत्तरी करणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ विसोही करणेणं ॥ विसल्ली करणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ उससिएणं ॥ नीससिएणं ॥

खासिएणं ॥ छीएणं ॥ जंभाइएणं ॥ उडुएणं ॥ वायनिसग्गेणं ॥ भमलिए ॥ पित्तमुच्छाए ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्जमे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं ॥ भगवंताणं ॥ नमुक्कारेणं ॥ न पारेमि ॥ ताव कायं ॥ ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ अथ ध्यान करवानो पाठ ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणं दणं च ॥ सुमइं च ॥ पउमप्पहं, सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस, वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं, धम्म संति

च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं ॥ नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रय मला ॥ पहीण जरमरणा ॥ चउवी-संपि जिणवरा, तिथ्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरूग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अ-हियं पयास यरा ॥ सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि ममं दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सामायिकना पच्चखकाण करवानो पाठ ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्च-रकामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरि-हामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धोनी तथा अरिहंतोनी स्तुति करवानो पाठ ॥

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं॥ आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयं संबुद्धाणं॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहथ्थीणं॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं॥ अभयदयाणं, चख्खुदयाणं॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं॥ धम्मनायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥दीवोत्ताणं;सरणगइ पइट्ठाणं॥ अप्पडिहय वरनाणं दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं; सिव, मयल, मरुअ, मणंत, मक्खय, मवाबाह, मपुण-

राविन्ति, सिद्धिगइ, नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताण, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ठाण संपाविउ कामस्स, णमो जिणाणं ॥ इति ॥

॥ सामायिक पारवानो पाठ ॥

॥ नवमा सामायिकव्रत विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, ते आलोउं, सामायिकमां मन, वचन, कायाना योग पारुवा ध्याने प्रवर्ताव्या होय, सामायिकमां समता न कीधी होय, अणपूगी पारी होय, दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, ए बत्रीश दोष मांहेलो दोष लाग्यो होय, ते तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सामायिकमां राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा, ए चार कथा मांहेली कथा कीधी होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ सामायिकनुं पच्चरकाण लखियें छेये ॥

॥ फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं, किट्टियं, अणुपालियं, आणाए, आराहियं, भवति ॥ ७ ॥ इण आठ पच्चरकाण सहित न पाल्या होय, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ते पछी त्रण नवकार गणीने सामायिक ठेकाणे करवी ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमण लिख्यते ॥

॥ इछामिणं भंते, तुम्मेहिं अभणुनायं समाणे, देवसि पडिक्कमणं ठाएमि, देवसि ज्ञान, दर्शन चरित्ता चरिते तप, अतिचार चिंतवणार्थं, करेमि काउस्सग्गं, इहां नमो अरिहंताणंनो संपूर्ण पाठ कहेवो. पछी करेमि भंतेनी पाटी संपूर्ण कहेवी. पछी इछामी ठाएमि काउस्सग्गं, जो मे देवसि अइयारो कउ, काइउ, वाइउ, माणसिउ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो,

अकरणिज्जो, दुज्झाउं, डुविचिंचितिउं, अणायारो, अणच्छियव्वो, असावग पावगो, नाणे तहं दंसणे, चरित्ता चरित्ते, सुइए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिरकाव्वयाणं, बारस्स विहस्स, सावग धम्मस्स, जंखण्डियं, जं विराहियं, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ आगमे तिविहे पणते ॥ तंजहा ॥ सुत्तागमे, अछागमे, तदुन्नयागमे, एवा श्रीज्ञानने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय ते आलोउं जं वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणरकरं, अच्चख्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुठुदिन्नं, दुठुपडिछियं, अकाले कउ सद्याए, काले नकउ सद्याए, असद्याए सद्यायं, सद्याए न सद्यायं, जणतां गुणतां, विचारतां ज्ञान अने ज्ञानवंतनी आशातना कीधी होय, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ २ ॥

एहवा श्रीसमकेत रत्न पदार्थने विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, ते आलोउं, श्री जिन-वचन साचा करी समां श्रद्ध्या न होय, प्रतीत्यां न होय, रुच्यां न होय, परदरसणीको कांक्षा कोधी होय, फल प्रत्ये संदेह आण्यो होय, पर-पाखंडीनी प्रशंसा कीधी होय, परपाखंडी शुं संस्तव परिचय कीधो होय, ते महारा समकेत रुप रत्नने विषे मिथ्यात्व रुपिणि रज मेल लाग्यो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ २ ॥

॥ अथ नवाणुं अतिचार लिख्यते ॥

॥ पहेला थूल प्राणातिपात विरमणव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. रीषवशे गाढुं बंधण बांध्युं होय, गाढो घाव घाल्यो होय, अवयवना विछेद कीधा होय, अतिभार घाल्या होय, भात पाणीनो विछेद कीधो होय, तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ ३ ॥

॥ बीजा थुलमृषावाद विरमणव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. सहसात्कारे कोइप्रत्यें कूडुं आल दीधुं होय, रहस्य कोइनी छानी वात प्रगट कीधी होय, स्त्रीपुरुषना मर्म प्रकाश्या होय, कोइ प्रत्ये अपाय पाडवा जणी मृषा उपदेश दीधो होय, कूडालेख लख्या होय तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ४ ॥

॥ त्रिजा थूल अदत्तादान विरमणव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय ते आलोउं. चोरनी चोराइ वस्तु लीधी होय. चोरने सहाय दीधुं होय, राज्य विरुद्ध कीधुं होय, कूडां तोलां, कूडां मापां कीधां होय, वस्तु मांहे भेल संभेल किधां होय, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ५ ॥

चोथा थूल मेहुणाउं विरमणव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. इत्तरिया

थोमा कालनी राखीशुं गमन कीधुं होय, अपरग्रहीशुं गमन कीधुं होय, अनंगक्रीमा कीधी होय, पर विवाह नातरां जोमयां होय, काम नोगनी तीव्र अभिलाषा कीधी होय, तस्स मिछामि दुक्कमं ॥ ६ ॥

पांचमा थूलपरिग्रह परिणाम विरमणव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं खेत्र, वत्थु, हिरण, सुवन्न, धन धान्य, दोपद, चोपद कुविय धातुना परिमाण अतिक्रम्यां होय, तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ ७ ॥

छठा दिसिविरमण व्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. उंची, नीची तीर्छि दिशाना परिमाण अतिक्रम्यां होय, क्षेत्र वधार्यां होय, पंथने संदे पडयो आगें चलाव्यो होय तस्स मिच्छामि डुक्कमं ॥ ८ ॥

॥ सातमा भोग उप परिभोग परिमाण-व्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं पच्चख्खाण उपरांत, सचित्तनो आहार कीधो होय, सचित प्रतिबद्धनो आहार कीधो होय, अपक्वना आहार कीधा होय, दुःपक्वना आहार कीधा होय, तुच्छ वस्तुना आहार कीधा होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ए ॥ पन्नर कर्मादान श्रावकने जाणियवा न समाचरियव्वा तं जहा ते आलोउं, इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवणिज्जे, लखवणिज्जे, रसवणिज्जे, विषवणिज्जे, केसवणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निलंछणकम्मे, दवग्गीदावणिया कम्मे, सर दह तलाय सोसणिया कम्मे, असइजण पोसणिया कम्मे, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

॥ आठमा अनर्थदंड विरमणव्रतने विषे

जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं कंदर्पनी कथा कीधी होय, भांडचेष्टा कीधी होय, मूखरी वचन बोल्या होय, अधिकरण जोडी मूक्यां होय, भोग उपपरिभोग वस्तु अधिक वधारी होय; तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ११ ॥

॥ नवमा सामायिक व्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. सामायिकमां मन, वचन, कायाना योग माठा ध्यानें प्रवर्त्ताव्या होय, सामायिकमां समता न कीधी होय अणपूगी पाली होय, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥१२॥

॥ दशमा देशावगाशिक व्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. नियमी भूमिकानी बाहेर थकी वस्तु अणावी होय, अथवा मोकलावी होय, शब्द करी जणाव्यो होय, रूप करी देखाडयो होय, पुद्गल नाखीने आपपणुं

जणाव्युं होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १३ ॥

॥ इग्यारमा पौषध व्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. सय्या संथारा, अप्प डिलेहीया दुप्पडिलेहीया, अप्पमार्ज्या दुप्पमार्ज्या होय, उच्चार पासवणभूमिका अप्प डिलेहीये दुप्पडिलेहीये अप्पमार्जिया दुप्पमार्जिया होय, पोसहमांहे निद्रा विकथादिक प्रमाद कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १४ ॥

बारमा अतिथि संविभागव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं. सूजती वस्तु सचित उपर मूकी होय, सचितें करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु पराई कीधी होय, मत्सरभावें दान दीधुं होय. तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १५ ॥

संलेषणाना पांच अतिचार लाग्या होय ते

आलोउं इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामजोगासंसप्पउगे, गाम जहत मरणांसी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १६ ॥

चउद ज्ञानना, पांच समकेतना, साठ बारव्रतोना, पन्नर कर्मादानना, पांच संलेषणाना, ए नवाणुं अतिचार मांहे कोइ दोष लाग्यो होय, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १७ ॥

अढार पापस्थानक ते आलोउं, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशून्य, परपरिवाद, रतिअरति, मायामोसो, मिथ्यात्व दर्शनशल्य, ए अढार पापस्थानक में सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्यां होय, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १८ ॥

॥ पांच अणुव्रत मूलगुण, सात शिक्षाव्रत उत्तरगुण एने विषे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां अजाणतां कोइ दोष पाप लाग्या होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१९॥ इहां इच्छामि आलोइयं जो मे देवसिउ अइआरो कउ, ए पाटीजे पुर्वे लखीछे, ते संपूर्ण कहेवी. ॥२०॥

पछी सव्वस्सवि देवसियं दुचिंतियं, दुप्भासियं, दुचिठियं, अधिका उछा पाठ पढया होय, आगलनुं पाछल, पाछलनुं आगल, कोइ खोटा अक्षर, खोटी मात्रा बोलाव्या होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ २१ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहु सुभेण भे, देवसि वइक्कंतो, जत्ता, भे, जवणिज्जं

च न्ने, खामेमि खमासमणो, देवसिवइकमं, आवतियाए, पमिक्कमामि. खमासमाणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीस न्नयराए, जंकिंचिमिच्छाए, मणदुक्कमाए, वयदुक्कमाए, कायदुक्कमाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोन्नाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे देवसी अइआरो कर्ज, तस्स खमासमणो पमिकमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति लघु नवांगु अतिचार संपूर्ण ॥

अथ श्रावकसूत्र पढवानी आज्ञा छे? स्वामी जी ॥ एम कही नवकार कहेवा. पछी करेमि नंतनी पाटी कहेवी.

॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगल, सिद्धा मंगल, साहु मंगलं, केवलिपणत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा

लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा; केवलिपणत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पवज्जामि; अरिहंता सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपणत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि, ए चारो सरणा आपणे, और न सग्गा कोइ ॥ जे भव्य प्राणी आदरे; अखय अमरपद होइ ॥ १ ॥

पछी इच्छामि पडिक्कमिउं; जो मे देवसिओ अइआरो कउं; काइउं; वाइउं. ए संपूर्ण पाटी कहेनी. पछी इच्छाकारेणनी संपूर्ण पाटी कहेनी. पछी आगमे तिविहे पणत्तेनी संपूर्ण पाटी कहेनी; दरिसण सम्यक्त्व, परमथ संथवो वा, सुदिठ परमथ, सेवणावावि ॥ वावन्न कुदंसण वज्जणाय; इह सम्मत्तस्स सद्दहणा ॥ एवा समकेतनां समणोवासियांण; सम्मतस्स पंच अइयारा; पयाला, जाणियव्वा. न समाचरियव्वा. तंजहा ते आलोउं

॥ संका, कंखा, वितिगिच्छा; परपासंडी परसंसा; परपासंडी संथुवो, तस्स मिच्छा० ॥ १ ॥

पहेलूं अणुव्रत थुलाउं; पाणाइवायाउ वेरमणं; ॥ त्रस जीव; बेइंडी, तेइंडी, चउरिंडी; पंचेडी; जाणी प्रीछी संकल्पी ते मांही सगासबंधि शरीर मांहेला पीडा कारी; स अपराधि; ते उपरांत निरपराधी आकुटीने हणवानी बुद्धि करी; हणवानुं पच्चक्काण, जाव जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि; न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एवा पहेला थुल प्राणातिपात विरमणव्रतना पंच अइआरा, पयाला, जाणियवा, न समाचरियव्वातेतं जहा, आलोउं॥ बंधे, वहे, छविच्छेए, अइभारे, भातपाणीनो विच्छेद कीधो होय; तस्स-मिच्छामिडुक्कडं ॥२॥

बीजो अणुव्रत थूलाउ, मूसावायाउ वेरमणं ॥ कन्नाली; गोवाली; भूमाली; थापणमोसो;

मोटकी कूडीसाख इत्यादिक मोटका जुठ बोलवानां पच्चक्खाण. जावजीवाए डुविहं निविहेणं, न करेमि नकारवेमि मणसा; वयसा; कायसा; एवा बीजा थुल मृषावाद विरमणव्रतना पंच अइआरा जाणियव्वा; न समाचरियव्वा, तं जहा ते आलोउं ॥ सहस्सा ब्भक्खाणे; रहस्सा ब्भक्खाणे; सदारामंतब्भेए; मोसुवएसे; कुडलेह करणे, तस्स मिच्छा० ॥ २ ॥

त्रीजुं अणुव्रत थूलाउं अदिन्नादाणाउं वेरमणं खातर खणी, गांठडी छोडी, ताला परकुंची; पडी वस्तु धणीयाती जाणी, वाट पाडी इत्यादिक महोटकां अदत्तादान लेवानुं पच्चक्खाण जीवजीवाए डुविहं, तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा कायसा एहवा त्रीजा थूल अदत्तादान विरमणव्रतना पंच अइआरा, जाणियव्वा, न समाचरियव्वा. तं जहाते आलोउं, तेना-

हरे, तक्करप्पवगे, विरुद्धरज्जाइक्कम्मे, कूड तोले, कूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

चोथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमणं, सदारा संतोसे, अवसेसं मेहुण सेववानो पच्चखाण, जाव जीवाए देवता देवी संबंधि, दुविहं तिविहेणं न करेमी, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा तथा मनुष्य तिर्यंच संबंधि एगविहं, एगविहेणं न करेमि कायसा एवा चोथा थूल मेहुणाउ विरमणव्रतना पंच अइआरा जाणियवा, न समाचरियवा, तं जहा ते आलोउं ॥ इत्तरपरिग्गहिया गमणे, अपरिग्गहिया गमणे, अनंगक्रीडा, परविवाह करणे, कामभोगनी तीव्र अभिलाषा कीधी होय, तस्स मिच्छा० ॥ ४ ॥

पांचमुं अणुव्रत थुलाउ परिग्गहाउ वेरमणं, खित वत्थुनुं यथा परिमाण, हिरण सुवन्ननुं

यथापरिमाण, धन धान्यनुं यथापरिमाण, दुपद चउपदनुं यथा परिमाण, कुवियधातुनुं यथा परिमाण, एवा यथा परिमाण कीधां छे, ते उपरांत पोतानो करी परिग्रह राखवानुं पच्चक्काण, जावजीवाए ॥ एगविहं तिविहेणं, न करेमि मणसा वयसा कायसा एवा पांचमा थूलपरिग्रह परिमाण विरमण व्रतना पंच अइआरा जाणियव्वा. न समाचरियव्वा ॥ तंजहा ते आलोउं. खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण सुवण प्पमाणाइक्कमे, धन धान्यप्पमाणाक्कमे, दुपद चउप्पदपमाणाइक्कमे, कुविय धातुप्पमाइक्कमे, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ५ ॥

छठुं दिसिव्रत. उर्द्धदिसिनुं यथापरिमाण, अधो दिशिनुं यथापरिमाण, तिरछी दिशिनुं यथापरिमाण, एवा यथापरिमाण कीधां छे, ते उपरांत पोतानी स्वेछाए कायाए करी जाइने पांच आ-

अत्र सेववानुं पच्चक्काण जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं, न करेमि मणसा, वयसा, कायसा, एवा छठा दिशिविरमण व्रत पंच अइयारा जाणियवा न समाचरियवा. तं जहा ते आलाउं, उड्ढ दिसि प्पमाणाइक्कम्मे, अहोदिसि प्पमाणाइक्कम्मे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कम्मे, खितवुड्ढि, सयंतराद्धाए, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ६ ॥

सातमुंव्रतउपभोग परिभोग विहं, पच्चक्काय माणे, उल्लणियाविहं, दंतणविणं, फलविहं, अप्नंगणविहं, उवट्टणविहं, मंघणविहं, वछविहं, विलेवणविहं, पुप्फविहं, आभरणविहं, धुपविहं, पेजविहं, भख्खणविहं, उदणविहं, सूपविहं, विगयविहं, सागविहं, माहुरविहं, जिमणविहं, पाणीविहं, मुखवास विहं, वाहणविहं, वाहनिविहं, सयणविहं, सचित्तविहं, दवविहं, ए छवीश बोलकी मुरजादा कीनी हे ते उपरांत उपभोग

परिभोग भोग निमित्ते भोगववानां पच्चख्खाणं जावजीवाए एगविहं तिविहणं न करेमि मणसा, वयसा कायसा, एवा सातमा उत्र भोग परिभोग डुविहा पणत्ता तं जहा ॥ भोयणाउय कम्मउय, भोयणाउ समणोवासियाणं, पंच अइआरा जाणियवा न समाचरियव्वा. तं जहा ते आलोउं. सचित्त आहारे, सचित पडिबद्ध आहारे, अप्पोलीउसहि भख्कणया, दुप्पोलीनुसहिभख्खणया तुछोसहि भख्खणया, तस्स मिछामि डुक्कडं,

चउदणजेतु कम्मउणसमणोवासयाणं पन्नरस कम्म दाणाय, जाणियव्वा न समाचरियव्वा. तं जहा ते आ लोउं इंगालकम्मे, जाव असइजण पोसणियाकम्मे, तस्स मिछमि दुक्कडं ॥

आठमु अनर्थदंडविरमणव्रत चउविह पणते तंजहा ॥ अवझाणाचरियं, पमायाचरियं,

हिंसप्पयाणं, पावकम्मोवएसे. एवा अनर्थदंड सेववानां पच्चक्खाण तेमांहे आठ आगार ॥ आयेवा, रायेवा, नायेवा, परिवारेवा, देवेवा, नागेवा, जक्खेवा, भूये वा जावजीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एवा आठमा अनर्थदंड विरमणव्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समाचरियव्वा तं जहा ते आलोउं कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, सजुत्ता हिगरणे, उवभोग परिभोग अइरित्ते, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ८ ॥

नवमुं सामायिक व्रत, सावद्यं योगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, एहवी सद्दहणा परुपणा फरसणा करुं, तेवारे शुद्ध एवा नवमा सामायिक व्रतना, पंच अइयारा जाणियव्वा, न समाचरियव्वा. तंजहा

ते आलोउं, मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे. सामाइयस्स अकरणिआए, सामाइयस्स अणवुठयस्य करणिआए तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ए ॥

दशमुं देशावगाशिकव्रत, दिनप्रत्यें प्रजातथी प्रारंजीने पूर्वादिक ठ दिशिमांहे जेटली जूमिका मोकली राखी ठे, ते उपरांत सइच्छाए कायायें करी जइने पांच आश्रव सेववानुं पच्चकाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि डुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तथा जेटली जुमिका मोकळी राखी ठे, तेमांहे जे डव्यादिकनी मर्यादा कीधी ठे ते, उपरांत उवभोग परिजोग, जोगववा निमित्तेंभोगववानां पच्चक्काण जाव दिवसं, पज्जुवासामि, एगविहं; तिविहेणं, न करेमि मणसा, वयसा, कायसा, एवी सद्दहणा परूपणा फरसना करुं,

तेवारे शुद्ध एवा दशमा देशावगाशिक व्रतना पंच अइआरा, जाणियव्वा, न समाचरियव्वा. तं जहा ते आलोउं. आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रुवाणुवाइ. बहियापुग्गलपख्खेवे. तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

अगीयारमुं पडिपुण पोषधव्रत चउविहं, पिआहारं, असणं, पाणं खाइमं, साइमंनुं पच्चरकाण. अबंभ सेववानुंपच्चख्खाण, अमुक्कमणि सोवननुं पच्चरकाण, मालावण विलेवननुं पच्चरकाण शस्त्र मुशलादिक सावद्य जोगनुं पच्चरकाण, जाव अहोरत्तं, पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा, वयसा, कायसा, एवी सद्दहणा परुपणा फरसना करुं तेवारे शुद्ध, एवा अगीयारमा पोषधव्रतना पंच अइआरा जाणियवा, न समाचरियवा. तं जहा, ते आलोउं सद्या संथारा, अपडिलेहिया दुप्पडिले-

हिया, सद्या संथारा, अप्पमज्जिया दुप्पमज्जिया, उच्चारपासवण भूमिका, अप्पडिलेहिया दुप्पडिलेहिया, अप्पज्जिया दुप्पमज्जिया, पोसासमं अणणुपालणिआ तस्स मिच्छामि दुक्करुं ॥ ११ ॥

बारमुं अतिथिसंविभागव्रत, समणे निग्गंथे, फासु एसणिज्जेणं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, वच्छ पडिग्गह, कंबल पायपुछणेणं, पडिहारे पीढफलग सद्या संथारा, उसह भेसज्जेणं, पडिलाभेमाणे विहरंमि. एवी सद्दहणा प्ररूपणा फरसना करुं, तेवारेशुद्ध एवा बारमा अतिथिसंविभागव्रतना पंच अइआरा जाणियव्वा. न समाचरिअव्वा, तं जहा. ते आलोउं. सचित्त निखिवणिया, सचित्त पिहणिया, कालाइक्कमे, परोवएसे, मछरयाए, तस्स मिछामि डुक्करुं ॥ १२ ॥

अपछिम मरणांतिक संलेहणा भुसणा, आराहणा पौषधशाला पुंजी पुंजीने, उच्चारपासवण

भूमिका पडिलेही पडिलेहीने, गमणागमण पडि-
क्कमिने, मात्रादिक संथारा संथारी संथारोने,
मात्रादिक संथारा दुरुही डुरुहीने, पूर्व तथा
उतरदिसि पल्यंकादिक आसण, बेसी,बेसीने,कर-
यल समपरिग्गहियं सिरसा वत्तंमच्छएण अंजलि
कट्टु, एवंवयासी नमुच्छुणं, अरिहंताणं, भगवं-
ताणं, जाव संपत्ताणं, जयवंता वर्त्तमान तीर्थंक-
रने इम अनंता सिद्ध भगवानने नमस्कार क-
रीने, पोताना धर्माचार्यजीने नमस्कार करीने,
पूर्वे जे वृत आदर्यां छे, तेमां जे अतिचार दोष
लाग्या होय, ते सर्व आलोइ, पडिक्कमि, निंदी-
ने, साधु प्रमुख चार तीर्थ खमावीने, निःशल्य
थइने, सव्वं पाणाइवायाउ पच्चखामि, सव्वं
मुसावायाउ पच्चक्खामि, सव्व अदिन्नादाणा-
ओ पच्चखामि, सव्वं मेहुणाउपच्चक्खामि,
सव्वं परिग्गहाउ पच्चक्खामि, सव्वं, कोहं, माणं,

मायं, लोभं, जाव मिथ्यादंसणशल्य, अकर ज्जिणजंजोगं पच्चखामि. जावजीवाए तिविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतपि नाणुजाणामि मणसा, वयसा, कायसा. एम अढारा पापस्थानक पच्चखीने सव्वं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं पच्चखामि, जावज्जीवाए इम चार आहार पच्चखीने जं पियं, इमंशरीरं, इठं, कंतं, पीयं, मणुन्नं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, भंडकरंडसमाणे, रयणकरंडगभूय, माणंसिया, माणं उन्हा, माणं खुहा, माणं पिवासा, माणं वाला, माणं चोरा, माणं दंसमसग्गा, माणं वाइयं, पितिय्या, कप्फआ, संभसन्निवाइया, विवहा रोगायंका, परिसा, उवसग्गा, फासा, फुसंति, इमपियणं, चरिमेहिं उस्सासे निस्सासेहिं, वोसिरामि त्तिकट्ट. एम शरीर वोसरावीने, कालंअणवकंखमाणे, विहरामि,

एवी सद्दहणा परूपणा फरसना करुं. तेवारे शुद्ध एवा अपच्छिम मरणांतिक संलेहणा, झुसणा आराहणाना, पंच अइआरा जाणियव्वा, न समाचरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं, इहलोगासंसप्पउगे; परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, काम भोगासंसप्पउगे, मा मज्ज हुज्ज मरणंते तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १२ ॥

एम समकेत पूर्वक बार व्रत संलेखणा सहित इनविषे कोइ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां अजाणतां कोइ दोष पाप लाग्यां होय तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १३ ॥

अढार पापस्थानक ते आलोउं, प्राणातितिपात, मृषावाद, अदत्तादान; मैथुन; परिग्रह; क्रोध; मान; माया, लोभ; रागद्वेष; कलह; अभ्याख्यान; पैशुन्य; परपरिवाद; रति; अरति; मायामोषो; मिथ्यात्त्वदर्शन शल्य. ए अढारे पा-

पस्थानक में सेव्यां होय; सेवराव्यां होय; सेवता प्रत्यें अनुमोद्यां होय; तस्स मिछामि दुक्कडं ॥१८

ते इहां आखी पाटी कहेनी. तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स; अप्पुट्ठिंमि आराहणाए; विरहमि विराहणाए; वंदामि जिण चउवीसं पछी इछामि खमासमणोनी पाटी कहेनी. दो वार उक्कडु बेठ कर हाथ गोडा विचाले राखीने कहेनी ॥ इति श्रावकसूत्र संपूर्ण ॥

फेर पांच पदोकों वंदना करणेकी आज्ञा हे स्वामीजी ? ॥ णमो अरिहंताणं; णमो सिद्धाणं; णमो आयरियाणं; णमो उवज्झायाणं; णमो लोए सव्वसाहूणं.

१ णमो अरिहंताणं केतां श्री अरिहंतजी प्रत्यें म्हारी वंदना नमस्कार होजो. श्री अरिहंतजी केवा छे ! एकहजार आठ उत्तम लक्षण गुणे करीने बिराजमान छे; चोत्रीस अतिशय पांत्रीश वा-

णीये करी विराज मान छे; बार गुणें करी सहित चोशठ इंद्रना पूजनिक; अनंतज्ञान; अनंतदर्शन; अनंतचारित्र; अनंतलोचन; अनंत बळवीर्य; अनंता सुख; दिव्यध्वनि; भामंडल; पीठिका; सिंहासन; अशोक वृक्ष; फूलवर्षा; देव दुंदुभि, चामर विंजाय; छत्र धरे; पुरुषाकार पराक्रमके धरणहार, जयवंता वर्त्तमान काल लोका लोकके प्रकाशका करणहारे सर्व देखे, सर्व जाणे, जिनसे कोइ पदार्थ छाना नहीं, अढ्ढाइ द्वीप पंदरा क्षेत्रमांहे विचरे, जघन्यतो वीश तीर्थंकरदेवजी, उत्कृष्टा एकशोशाठ तथा एकशो सितेर तीर्थंकर देवजी प्रत्यें म्हारी वंदना नमस्कार होजो, तिख्खुत्तोना पाठ सहित १००८ वार त्रिकाल त्रिकाल, मन, वचन, कायायें करी वांडुं छुं ॥ १ ॥

२ णमो सिद्धाणं केतां श्री सिद्धांजी प्रत्ये म्हारी वंदना नमस्कार होजो, सिद्धांजी केवा,

है ? अनंताज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चत्र, अनंत वीर्य, अनंत सुख, अनंता सुखमे सुख, खायिक सम्यक्त्वना धणी होय, अटल अवगाहना हुइ. अमूर्ति हुए, अगुरुलघु हुए. पांच प्रकारका ज्ञानावरणीयकर्म क्षय किया, अनंता केवलज्ञान प्रगट हुआ, नव प्रकारे दर्शना वरणीयकर्मक्षय किया, अनंता केवलदर्शन प्रगट हुआ; दोय प्रकारे वेदनीयकर्म क्षय किया, बाधा पीड़ा रहित हुआ, दोय प्रकारे मोहनीयकर्म क्षय किया लधुभुत हुआ, चार प्रकारे आउखा कर्म क्षय किया अमर हुआ, चार प्रकारे नामकर्म क्षय कियां अमुर्ति हुआ, दोय प्रकारे गोत्रकर्म क्षय किया खोड़ रहीत हुआ, पांच प्रकारे अंतरायकर्म क्षय किया अनंत शक्तिका धरणहार हुआ, पांच वर्ण नही, पांच रस नही, पांच सठाण नही, आठ फरस नहिं, त्रण वेद नाहिं,

होय गंध नहिं, काया नाहिं, कर्म नाहिं, जन्म नहिं, मरण नहिं, रोग नाहिं, शोक नहिं, वियोग नाहिं, मोह नहिं, निरंजन निराकार, एकत्रीश अतिशय, एकत्रीश गुण करी विराजमान पीस्तालीश लाख योजनको सिद्धशिला छे, सम छत्रके आकार छे, स्फटिक रत्नमयी छे, जिसको १४२३०२४ए एक क्रोड, बेतालीशलाख, त्रीशहजार, दोसो उगणपंचास जोजन जाजेरी परिधि छे, एक गाउके छठे भागनें उपरले परतलमांहे अणंता सिद्ध भगवान छे, सो सिद्ध पंदरा भेदका सीझे. १ तीर्थसिद्धा, २ अतीर्थसिद्धा, ३ तीर्थंकर सिद्धा, ४ अतीर्थंकरसिद्धा, ५ स्वयंबुद्धसिद्धा, ६ बुद्धिबोहियसिद्धा, ७ प्रत्येकबुधसिद्धा, ८स्त्रीलिंगसिद्धा, ए पुरुषलिंगसिद्धा, १० नपुंसकलिंगसिद्धा ११ स्वलिंगसिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहिलिंगसिद्धा १४ एकसिद्धा,

१६ अणेगसिद्धा. अनेकगुणो करीबिराजमान छे, तिणसिद्ध भगवानजी प्रत्ये मेरी वंदना नमस्कार होजो. १००८ वार मन, वचन, कायाये करी तिख्खुत्तोके पाठसेंती ॥ २ ॥

३ णमो आयरियाणं कहेतां आचार्यजी प्रत्ये म्हारी वंदना नमस्कार होजो, आचार्यजी केवा छे ? १ ज्ञानाचार, २ दर्शनाचार, ३ चारित्राचार, ४ तपाचार, ५ वीर्याचार, ए पांच आचार आप पाले और प्रत्ये पलवावे, छत्रीसगुणे करी विराजमान, बावन अणाचीर्णके टालणहार, अढार हजार सीलांग रथके धरणहार, आठ संपदाके धरणहार तेनां नाम कहे छे. आचार्य संपदा, सूत्रसंपदा, शरीर संपदा, वचन संपदा, मति संपदा, उपयोग संपदा, वाचना संपदा, संग्रह संपदा इत्यादि अनेक गुणे करी बिराजमान तिन आचार्यजी प्रत्ये म्हारी वंदना

नमस्कार होजो. मन वचन कायाये करीने एक हजार आठ वार तिख्खुत्तोके पाठसेंती ॥ ३ ॥

४ णमो उवझायाणं केतां उपाध्यायजी प्रत्ये महारी वंदना नमस्कार होजो. उपाध्यायजी केवा छे ? इग्यारा अंग, बारा उपांग आप जाणे, ओर ने जणावे अमृतवाणीये उपदेश देवे, भव्यजीवोको प्रतिबोधे, ज्ञानवंत, दर्शनवंत, चारित्रवंत, आचारांगजी, सूत्रगडांगजी, ठाणांगजी, समवायांगजी, विवाहपन्नत्ति, ज्ञाताजी, उपासकदशांगजी, अंतगडजी, अणुत्तरोववाइजी प्रश्नव्याकरणजी, विपाकजी एवं इग्यारां अंगसूत्र जाणवां. उववाइजी, रायप्पसेणीजी, जीवाभिगमजी, पन्नवणाजी, जंबुद्वीपपन्नत्तिजी, चंद्रपन्नत्तिजी, सूर्यपन्नत्तिजी, निरयावलिकाजी, कप्पवडंसियाजी, पुप्फियाजी, पुप्फचुलियाजी, वन्हिदशाजी. एवं बारा उपांग जाणवां, निशीथजी,

बृहत् कल्पजी, व्यवहारजी, दशाश्रुतस्कंधजी. एवं चार छेद जाणवा, नंदीजी. अणुयोगद्वारजी, दशवैकालिकजी, उत्तराध्ययनजी. एवं चार मूल-सूत्र जाणवां. एकतीस हूआ अरु बत्तीसमा आ-वश्यकजी जानना, ज्ञानके भंडार, दयाके सागर, ज्ञानरूपी नेत्रके दातार, अनेक गुणे, करी बिरा-जे तिन उपाध्यायजी प्रत्ये म्हारी मन, वचन, कायाये करीने त्रिकाल त्रिकाल तिख्खुत्तोके पाठसेती एक हजार आठवार वंदना नमस्कार होजो ॥ ४ ॥

७ धर्माचार्यप्रत्ये म्हारी वंदना नमस्कार होजो धर्माचार्यजी केहवा छे ? धर्मोपदेशके दा-तार, मोक्ष मार्गके दातार, सम्यक्त्व रत्नके दातार; ज्ञानरूपी नेत्रके दातार; धन्य छे ग्राम, नगर, धन्य छे देश, पुर पाटण, जिहां धर्माचा-र्यजी विचरेछे, धन्य ओ श्रावक श्राविका जो

सूजता आहार पाणी वस्त्र पात्र प्रति लाभे छे. अनेक गुणे करी विराजमान छे. तिण धर्माचार्यजी प्रत्ये म्हारी वंदना नमस्कार होजो. त्रिकाल त्रिकाल, मन, वचन, कायायें करी तिख्खुतोके पाठसेंती एक हजार आठ वार नमस्कार होजो॥५॥

५ 'णमो लोए सव्वसाहूणं' कहेतां श्री साधुजी प्रत्ये म्हारी वंदना नमस्कार होजो. श्री साधुजी केवा छे? पंच महाव्रतके पालनहार, पंचेंद्रियकेदमनहार, चार कषायके टालणहार, पांचसमिते समीता, त्रण गुप्तेगुप्ता, करणसच्चे, जोगसच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, नाणसंपन्ने, दरिसण संपन्ने, चारित्र संपन्ने, मनसमिति धारना, वचन समिति धारना, कायसमिति धारना, शीत आदिकवेदना सहे, मरणांतिक उपसर्ग सहे, पांच आचारके पालणहार, छकायके रखवाल, सात कुव्यसनके त्यागी, आठ मदके विदारणहार,

नववाडे ब्रह्मचर्यके पालणहार, दशभेदे यतिधर्मके धरणहार, वारा भेदे तपके तपनहार, तेर क्रिया के टालणहार, सत्तराभेदे संयमके पालणहार, अढारा पापके त्यागनहार, वावीश परिसहके जीतनहार, सत्तावीश गुणे करी विराजमान, त्रीश महामोहनीय कर्मके निवारणहार, बहेंतालीसदोष टालके आहारलेवे, बावन अनाचीर्णके टालनहार, अंताहारी, पंताहारी, लोहाहारी, तुछाहारी, कोहजीय, माणजीय, मायाजीय, लोभजीय, निंदाजीय, अढाइ द्वीप पंदरा क्षेत्रमें विचरे, जघन्य दोय हजार क्रोड साधु, साधवी, उत्कृष्ठा नव हजार क्रोड साधु साधवी, तिण साधुजी प्रत्यें महारी वंदना नमस्कार होजो. त्रिकाल त्रिकाल मन, वचन, कायायें करीने तिख्खुत्तोके पाठसेंतीएक हजार आठ वार नमस्कार होजो॥ इहां तक चार आवश्यक पूर हूए ॥ पांचमा

आवश्यककी आज्ञा है स्वामी ?

॥ दोहरा ॥

अनंतचोवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड ॥
केवलज्ञानी सर्व थिविर, वंदु बे करजोड ॥ १ ॥
दोय कोडि केवलधरा, विहर माण जिनवीस ॥
सहस युगल कोडी नमुं, साधु नमुं निशदिश ॥२॥
खम्या खमाया में खम्या सर्व जीवा लार ॥
सिद्धा सख आलोवशुं, मेरा वयर नहि किस लार ।३।
गाथा ॥ खामेमि सव्व जीवा, सव्व जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सव्वभुएसु, वेरं मझं न केणई ॥ ४ ॥

अढीद्वीप पदर क्षेत्रमां श्रावक श्रावीका असंख्यात द्वीप समुद्रमां तीर्यंच श्रावक श्रावीका दान देवे, शीयळ पाळे तपस्या करे, भली भावना भावे, जीनराजनो मारग साचो सरधे ने फरसे, जो उत्तम पुरुषासुंमें हाथ जोड मान मोडने खमतखामणा कीजो.

सातलाख पृथ्वीकाय, सातलाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाखप्रत्येक वनस्पतिकी जात, चौद लाख साधारण वनस्पतिकी जात, बे लाख बेंद्री, बे लाख तेंद्री, बे लाख चौरिंद्री, चार लाख नारकी, चार लाख देवताकी जात, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रीकी जात, चौद लाख मनुष्यकी जात, एवं समुच्चय चार गति चोरासी लाख जीवायोनिकों खमावुं ॥ सुक्ष्मने बादर, त्रसने थावर, अपरजापतीने परजापती, सन्नीने असन्नी, कोइ जीवने हण्यो होय हणाव्यो होय, काटयो होय, छेद्यो होय, भेद्यो होय, तो सब जीवाका चार अढार लाख चोवीस हजार एकसोवीस मीछामी डुकडं कुल कोडी १९७५०००० जीवाजीवणकी वीराधना कीनी होयतो मिछामिदुक्कडं.

इहां नवकार कहेना, फेर करेमिभंतेका

पाठ कहेनां, अठारा पाप स्थानक कहेणां, फेर इच्छामिठामि प्रायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं. ए सारी पाटी कहेणी फेर तस्सउत्तरीकी पाटी कहेणी; फेर चार लोगस्सकी पाटीका ध्यान करना. नित्यका, आगे आप आपणी धारणा प्रमाणे वारना, फेर नवकार कहकर ध्यान पालना समाप्त करना. फेर आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया होय, धर्मध्यान शुक्ल ध्यान न ध्याया होय, तथा ध्यानके विषे मन चल्या होय, वचन चल्या होय, काया चली होय, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

फेर एक पाटी लोगस्सकी उच्चारसे पढणी, फेर दोय पाटी इच्छामि खमासणोकी पढणी फेर एसा कहेणा, पांच आवश्यक पूरा हुआ छट्ठा आवश्शककी आज्ञा है स्वामीजी ? फेर उभा होइने गुरु पासे पच्चक्खाण करना, फेर यह कहना ! सामायिक पहेला, २ चउविसत्थो दुगा

तीसरा बंदना चोथा पडिक्कमणा पांचमा काउस्स-ग्ग छठा, पच्चरकाण इन विषे कोइ दोष पाप लाग्या होय ते आलोउं. आगेंका पीछें, पीछेंका आगें, वधती कमती अक्षर मात्रा बोलाइ होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ उपर दो पाटी नमुथ्थु णंकी जे पूर्व कहेली छे, ते कहेणी ॥

॥ इति श्रमणोपासकको पडिक्कमणो समाप्त ॥

पच्चरकाण करवानी विगत.

पच्चरकाण पहेलुं नमोकारशीनुं.

सुरेउग्गए, नमोकारसहियं, पच्चरकामि—चउविहं, पिआहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं-अन्नथणा भोगेणं—सहसागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

पच्चरकाण वीजुं पोहोरशीनुं.

सुरेउग्गए, पोरसियं, पच्चरकामि—चउविह पिआहारंअसणं, पाणं, खाइमं, साइमं—अनथणा

भोगेणं-सहसागारेणं पच्छन्न कालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं-सव्वसमाहिवत्तीयागारेणं-वोसिरामि. ॥ २ ॥

पच्चक्खाण त्रीजुं मध्याननुं.

सुरेउग्गए पुरिमढं पच्चकामि-चउविहं, पिआहारं-असणं; पाणं, खाइमं साइमं-अन्नथणा भोगेणं सहसागारेणं-पच्छन्न कालेणं-दिसामोहेणं-साहुवयणेणं महत्तरागारेणं-सव्व समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

पच्चक्खाण चोथुं दुविहारनुं.

एकटाणा उपरांत, दुविहं, पिआहारं, पच्चक्कामी, असणं, खाइमं, अन्नयणा भोगेणं; सहसागरेणं, वोसिरामि. ॥ ४ ॥

पच्चक्खाण पांचमुं आंबेलनुं.

आयंबीलं वीहं पच्चक्कामि, तिविहं; चउवीहं, पीआहारं, असणं, पाणं खाइमं, साइमं,

अन्नथणा भोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गीह-
थसंसठेणं उखीत्तविगेणं, परीठावणीयागारेणं,
महत्रागारेण,सव्वसमाहि वतीयागारेणं वोसरामि.

पच्चखाण छठुं उपवासनुं.

सुरेउग्गए, अन्नत्तठं पच्चखामि, चउविहं,
पिआहारं, असणं पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न-
थणा नोगेणं, सहसा गारेणं, वोसिरामि.

पच्चखाण सातमुं निविनुं.

निविगइयं, विहं, पच्चखामि, चउविहं,
विआहारं, असणं, पाणं; खाइमं, साइमं, अन्न-
थणा नोगेणं, सहसा गारेणं, लेवालेवेणं, गीहं-
थसंसठेणं, उखी तविवेगेणं, पडुचणखेणं, सव्व-
समाहि वत्तीयागारेणं, वोसिरामि.

(पडिकमणुं करीने उपर लखेलां पच्चखाण
मधेनुं गमे ते एक जातनुं पोताथी पळी शके
तेवुं यथाशक्ति प्रमाणे एक पच्चखाण जरुर करवुं

जोइए एमां अंतर पड्वा देवो नही.

॥ अथ चोवीशी लिख्यते ॥

॥ लावणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु समरणा, तीर्थंकर रतनारी माला, सुमरण नित्य करणा ॥ समरीयें माला, मेरी जान समरीयें माला ॥ ज्युं कटे करमका जाला, ए जीव तणा रखवाला, ध्यान तीर्थंकरका धरणा रे ध्या० ॥ पांच पद चोवीश जिणंदका, नित्य लीजे सरणा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ श्री रुषभ अजित संभव अभिनंदन, अति आनंद करनां ॥ सुमति सुपार्श्व चंद्रप्रभ, दास रहुं चरणा ॥ चरण नित्य वंदुं, मेरी जान चरण नित्य वंदुं ॥ ज्युं कटे कर्मका फंदा, तुम तजो जगतका धंधा, दीठा होय नयन अमितो ठरणां रे॥दीठा.॥ पांच पद० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, हिरिदय मांहे धरणां ॥ विमल अनंत

धर्मनाथ शांतिजी, दास रहुं चरणा ॥ जिणंद मोहे तारो, मेरी जान जिनंद मोहे तारो ॥ संसार लगे मोहे खारो, वैराग्य लगे मोहे प्यारो, में सदा दास चरणारो, नाथजी अब कृपा करणांरे ॥ नाथ० ॥ पांच पद० ॥३॥ कुंथुं अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, प्रभु तारण तारणा ॥ नमि नेम पार्श्व महावीरजी, पाय परा हरणा ॥ तरे भव्य प्राणी, मेरी जान तरे भव्य प्राणी ॥ संसार समुद्र जाणी, सूणो सूत्र सिद्धांतकी वाणी, पाप कर्मसे अब तो डरणां रे ॥ पाप० ॥ पांच पद० ॥४॥ इग्याराजी गणधर वीस विहरमान, वांदाशुं मीटे मरणा ॥ अनंत चोवीसीकु नित नित वांदु कुगति नही पडणा ॥ मिथ्या अंध मेटो, मेरी जान मिथ्या अंध मेटो ॥ रहो धर्मध्यानमें शेटो, जिनराज चरण नित्य भेटो ॥ दुःखदारिद्र सब तो हरणां रे ॥दुःख०॥ पांच पद० ॥५॥ जैनधर्म

पाया विन प्राणी, पापशुं पिंड भरणां ॥ नीट नीट मानव भव पायो, धर्मध्यान करणां ॥ करो शुद्ध करणी, मेरी जान करो शुद्ध करणी, निर्वाण तणी नीसरणी, तुम तजो पराइ परणी, एक चित्त धर्मध्यान करणां रे ॥एक०॥ पांच पद० ॥ ६ ॥ विहरमाण तीर्थंकर गणधर, मनमां शुद्ध करणां ॥ पत्र पारधि कहे कल्याणी, कीया तवन वरना ॥ वरन गुन कीना, मेरी जान वरन गुन कीना, जैसो अमृत प्याला पीना एक शरण धर्मका लीना रिखी लालचंद गुण कीना ॥ करो नवतत्त्वका निरणा रे करो० ॥ पांच पद चोवीश जिणंदजीका निश्चय लीजे शरणा ॥ ७ ॥

प्रतिक्रमणमां लागता दोषना १२४ प्रकार.

नवाणु अतिचारमांथी ज्ञानना १४ अतिचार वरजीने बाकीना ८५ रह्या ते ज्ञानना ८ आचारने १ बत्रीश असज्झाय टाळी वखतसर भणवुं. २ विनय सहित भणवुं. ३ ज्ञाननो सत्कार करी

जणवुं. ४ उपाध्यान सहित जणवुं. (सूत्र जणवाने माटे जे जे तप करवो कह्यो छे ते ते करीने) ५ उपकारीनो गुण ज्रुलवो नही. ६ शुद्ध उच्चार सहित जणवुं. ७ अर्थ सहित जणवुं. ८ पाठ, अर्थ विगेरे शुद्ध जणवुं तथा समकितना आठ आचारने १ जैन मतने विषे शंका न राखवी, २ अन्य मतनी वांछना न करवी, ३ करणीना फलनो संदेह न राखवो. ४ अन्य मतना आडंबर देखी मुझावुं नहि, ५ उपकारीना गुण दीपाववा, ६ समकितथी पडता जीवने स्थिर करवा, ७ चार तिर्थनी वाछलका करवी, ८ जैन मार्गनो महिमा निरवद्यपणे प्रकाशवो तथा चारित्रना ८ आचार ते ३ गुप्ति अने ५ सुमिति एटले १०८ तथा बार वृत ते पांच महाव्रत, ५ इंद्रिनुं, १ रात्री ज्रोजन अने १ मन ए बार तथा विर्यना ३ आचार ते धर्म कार्यमां बल गोपाववुं नहि, २ धर्म कार्य

उपयोग सहित करवुं, ३ यथाशक्ति मुजब क्रिया अनुष्ठान करवुं. ए मळी १२४ प्रकार.

प्रतिक्रमणनी सज्झाय.

करो पडिक्कमणुं भावशुं, दोय घडी शुभ ध्यान लालरे ॥ परभव जातां जीवने, संबल साचुं जाण लालरे ॥ कर० १ ॥ श्री मुनिवर समुचरे, श्रेणीकराय प्रतिबोध लालरे ॥ लाख खांडी सानातणी, दीये दिन प्रतिदान लालरे ॥ कर० २ ॥ लाख वरस लगीं ते वळी, एम दीए द्रव्य अपार लालरे ॥ एक सामायिकनी तोले, नावे तेह लगार लालरे ॥ कर० ३ ॥ सामायिक चउवीसथ्थो भलुं, वंदन दोय वार लालरे ॥ व्रत संभाळोरे आपणां, ते भव कर्म निवार लालरे ॥ कर० ४ ॥ कर काउसग शुभ ध्यांनथी, पच्चक्खाण सुधुं विचार लालरे ॥ दो संध्याये ते वळी, टाळो टाळो अतिचार लालरे ॥ कर० ५ ॥ सामायिक प्रसादथी,

लहीए अमर विमान लालरे ॥ धरमसिंह मुनी वर कहे, मुक्तितणुं एह निधान लालरे॥क०६॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ धम्मो मंगल महिमा निलो, धर्म समो नही कोय ॥ धर्मथकी नमे देवता, धर्मे शिव सुख होय ॥ ध० ॥१॥ जीवदया नित्य पालीयें, संयम सत्तर प्रकार ॥ बारा भेदें तप तपे, धर्म-तणो ए सार ॥ध०॥ ५ ॥ जिम तरुवरने फूलमे, भमरो रस लेवा जाय ॥ तिम संतोषे आतमा, फुलने पीमा न थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ इणविध विचरे गोचरी, वहोरे सूजतो आहार॥ ऊंच नीच मध्यम कुले, धन्य धन्य ते अणगार ॥ ध० ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहिं तृष्णा नहिं लोभ ॥ लाधो भाको दाये देहने, अणलाध्यां संतोष ॥ध०॥५॥ अध्ययन पहेले डुम्मपुष्फिए, सखरा अर्थ विचार ॥ पुण्यकलश शिष्य जेसती,

धर्मं जयजयकार ॥ ध० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ वैरागी पद

दमका नही भरोंसारे, करले चलनेका समान ॥ लख चौरासी भमके आया, गर्भकिया आस्थान ॥ दम० ॥ १ ॥ उत्तम कुलमें जन्मलीयाहै, सुखमेखान और पान ॥ भीरु परुया तेरा कोइ न साथी, साथी पुण्य और पाप ॥ दम०॥२॥ आशा तृष्णा भुख और निद्रा, कुमता रुप निधान ॥ दिन दिन बांधे पापकी संगति, व्यापे क्रोध और मान ॥ दम० ॥३॥ जुगसब ए जगंत पसारा, नारी विषकी खान ॥ माया लोभ आदके वैरी, इनशुं किया पहेचान ॥ दम० ॥४॥ पांचो चोर मुसे घर तेरा, इनकी खोटी वान ॥ इनने चोर बसे तन अंदर, मोह बसा सुख तान ॥दम०॥५॥ दो दिनका इह गोबलरासा, वो रे त्रिया वान ॥काल वैरी तेरा शिरपर खडे, सांधो

फिरता बान ॥द्म॥६॥ भाइबंध सब सगा संबंधी, राखे तेरा मान ॥ अंतसमे कोइ काम न आवे, किसपै मान गुमान ॥द्म०॥ ७ ॥ जप तप शील करोशुभ संगति, साधु सुपात्रें दान ॥ सेव साधु चरणे चित्त ल्यावो, प्रभु भज तज अभिमान ॥ द्म० ॥ ८ ॥

॥ अथ सवैया प्रारंभ ॥

॥ प्रथम कषाय वस, पाड्यो है जगत जीव, आदि करी चोकड़ीयें, उमर गमाई है ॥ क्रोध है पथर लीक, मान हें बज्जर थंभ, मुड्यो न मूड़त जाकी, एसी करकाइ है ॥ माया है बांस केरी जड़, लोभ है किरमजी रंग, धोयो ते धोवत जाकी, एसी छबि छाइ है ॥ मरी जावे नरक घोर, ताकुं नहिं और ठोर, एसो दुष्ट जीव जिने, समकित न पाइ है ॥ १ ॥ जासुं आगें चोकड़ीको, नाम है अप्रत्याख्यानी,

जा में जीव वर्ष एक, केरी स्थिति पाइ है ॥ क्रोध मान माया लोभ; जामें जीव रह्यो खोभ, आदिकेरी चोकडीशुं, अति हलकाई है ॥ क्रोध है जो हारु लीक, मान हारु केरो थंभ, माया मीढा सिंग सम, एवी दुःखदाइ है ॥ लोभ है मोरी केरो रंग, ताको नहिं होत भंग, मरीने तिर्यंच होय, विरति न आइ है ॥ प्रत्याख्यानी चोकडी में, वस्यो है चेतनराय, जीव जिहां चार मास, केरी स्थिति पाइ है. क्रोध है गा मेकी लीक, मान केठ केरो थंभ, पिठलीसें कुकमति, ज्ञानी बतलाइ है ॥ माया बल केरो मूत, संयमको नाहिं कूत, धर्मसेंती राखे हित, शुभ श्रावक विरति थाई है ॥ लोभ है खंजन को रंग, तासुं जीव राखे संग, मनखादेह बांधो जीव, मनुष्य देह पाई है ॥ ३ ॥ संजलको क्रोध जैंसो, पानी करी लीक जान ॥ आगेहीकुं

काढत है, पाछैहि मिटाई है ॥ मैण थंभ मान कह्यो, धुपलागी गली गयो, ताकी पंदराहि दिन, केरी तिथि पाइहै ॥ माया तागा केरो-बल, ऐसो जीव करे छल, केवलकी हाण करे, साधु विरति आइ है ॥ लोभ है हरिद रंग, धोयोहि न होय भंग, मोक्ष नहिं जासुं जीव, देवगति पाइ है ॥ ४ ॥

सवैयो दुजो.

नमुशिरिअरिहंत, कर्मको कीउ अंत, हुवा शो केवलवंत, करुणा भंडारी हे; अतिशे चो-तिश धार, पांतिश वाणी उचार, समजावे नर-नार, परउपकारी, हे, शरीर सुंदराकार, सुरज-शो, जलकार, गुण हे अनंत सार, दोष परीहा-री हे; कहेतहे तिलोकरीख, मनवचन काया करी, ललीं ललीं वारंवार, वंदणा हमारी हे. १ सकल करम टाल, वशकर लियो काल, मुगती-

ने रह्या माल, आत्मकु तारी हे; देखत सकल भाव, हुवा हे जगतराव, सदाही ज्ञायक ज्ञाव, ज्ञय अवीकारी हे, अचल अटलरुप, आवे नही भव कुप, अनुपम रुप जप, एसे सिध धारी हे; कहेत हे तिलोकरिख, बतावो ए वास प्रभु, सदाही उगत सुर, वंदणा हमारी हे. २. गुण हे छत्रीश पुर, धरत धरम उर, मारत करम कुर, सुमति वीचारी हे, शुध शो आचारवंत, सुंदर हे रुप कंत; ज्ञणीया सवि सिधांत, वांचणी सुप्यारी हे; अधिक मधुर वेण, कोइ नहि लोपे केण, सकल जीवाका शेण, किरत अपारी हे; कहत हे तिलोक रिख, हेतकार देत शीख, एशा आचारज ताकु, वंदणा हमारी हे. ३. पढत इग्गारा अंग, कर्मासु करे जंग, पाखंडी को मान भंग, करण हुशीयारी हे; च-दे पुरव धार जानत आगम सार, ज्ञवीयनके सुखकार, ज्रमता नीवारी

हे; पढावे भवीकजन, स्थिर करी देत मन, तप करी तावे तन, ममता नीवारी हे; कहेत हे तिलोरिख, ज्ञान भानु परतक्ष, एसा उपाध्याय ताकु वंदणा हमारी हे. ४ आदरी संजम भार, करणी करे अपार, सुमति गुप्ति धार, विकथा निवारि हे; जयणा करे छकाय, सावद्य न बोले वाय, बुझाइ कषाय लाय, किरिया भंडारी हे. ज्ञान भणे आठे जाम, लेवे भगवंत नाम, धरमको करे काम, समता के मारी हे; कहेत हे तिलोकरिख, कर्मोको टाले वीख, एसा मुनीराज ताकु; वंदणा हमारी हे. ५ समाप्तम्.

जैनधर्म संबंधी छापेला पुस्तकोनुं

सूचीपत्र. (शास्त्री लीपीमां छापेला)

जैन स्तुति. (आवृत्ति छठी.

आ पोथीमां आनुपुर्वि, छंदो, प्रस्तावीक गाथाओ सहित पुच्छीसुणं, दशवैकालीक सूत्र प्रथमनां चार अध्ययनो, ऊत्तराध्ययन सूत्रनुं ३-४ थुं अध्ययन, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिरस्तोत्र, महावीर स्वामीनुं चोढालीयुं तथा हालरीयुं तथा जीवराशीनी सज्जाय अने साधुवंदणा परदेशी राजाना प्रश्नोत्तर विगेरे विषयो आवेला छ पाना २२४ छे. मजबुत पाका पुंठाशी बंधाएल छे. किम्मत आठ आना.

चरम तीर्थंकरनी, चरम वखतनी चरम प्रसादी.

श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र.

श्रावकोने संसार व्यवहारमां रक्षक अने मार्गदर्शक थई पडे एवी सोनेरी शीखामणो उपरांत साधुओनो व्याख्यान माटे भव्य भंडार रूप थइ पडतुं श्री उत्तराध्यानजी सूत्र सरळ सेहेली भाषामां उपयोगी टीका साथे छपायेल छे महात्मा श्री महावीर भगवाने संथाराना छेल्ला वे दिवसमां उपदेशेल आ सूत्रमां घणा उत्तम बोध छे. जैन सिद्धान्तोनुं सरळ रहस्य

समजावे छे. भगवाने पोते जे रस्ते विजय मेळव्यो तेज रस्ता उपकारी प्रभुए खुला दिले बताव्या छे. कोइपण घर आ उपयोगी ज्ञान भंडार विना रहेवुं न जोइए. ज्ञान माटे उत्तमतक छे. किमत रुपीआ त्रण तथा पानाना आकारमां रु. २॥) पोष्ट खर्च ६ आना.

आचारंग सूत्र. (आवृति बीजी.)

अमृतना सुस्वाद माटे खात्री आपवानी जरुर नथी. वीर परमात्माना जीवन चरित्र अने अणगार महात्माओना आचार विचारथी वाकेफ थइ संसारमां श्रावक तरीकेनुं शुद्ध वर्तन राखवा आ पवित्र पुस्तक दरेक जैने वांचवुं जोइए आजकाल शास्त्रार्थना जे झगडा थाय छे ते आवां पुस्तकना वांचनथी आपोआप बंध थइ जशे. सर्व देशना लोको लाभ लइ शके माटे द्वीतियावृति मोटा नागरी बालबोध टाइपथी सहेलुं भाषान्तर अने मुलपाठ सहित मोटा खर्चे प्रसिद्ध करेल छे मुल्य रुपिया चार पोष्टेज खर्च वी. पी. साथे पांच आना.

श्री संघपट्टक.

संघे शी रीते वर्त्तवुं जोइए ते संबंधी नियमोना फरमाननो सर्वोत्तम ग्रंथ.

आ ग्रंथ अद्भुत काव्योमां रचाएल छे अने ते नवांगी वृत्ति करनार श्री अभयदेव सुरीना शिष्य श्री जीनवल्लभ सू-

रिए न्याय शैलीथी भरपुर घणीज उपयोगी अने वीस्तार वाळी मोटी टीका रची छे आ ग्रंथ मोटा जैनी टाइपोथी लगभग पानां (७००) नो तैयार छे ने तेने पाका पुंठाथी बंधाएल छे. आ ग्रंथनी फक्त थोडीज नकलो शीलीक छे. आ ग्रंथनी किम्मत प्रथम रु. २–८–० जोइए तेमणे ताकीदथी मंगावबुं पाछळथी पस्तावो थशे. टपाल खर्च वी. पी. साथे आठ आना.

सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ.

महंतमुनि तिलोक रीखजी कृत.

आ सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रने अमोए अमाराथी बनती महेनत बे त्रण प्रतो एकठी करीने शुद्ध करीने छपावी बहार पाडेल छे.

आ पुस्तक सारु मारवाड, मेवाड, पंजाब, दक्षिण विगेरे आदि स्थलोना भाइओने उपयोगी थाय तेवी बनती गोठवण करी छे. आ पुस्तकनी अंदर सामायिक प्रतिक्रमण अर्थ साथे दश पच्चखाणो, चतारी मंगळं, चार शरणां श्रावकने चितववाना त्रण मनोर्थ, प्रतिक्रमणना सज्जाय, जीवराशीनी सज्जाय उपदेशक पदो, महावीर स्वामीनुं चोढालीयुं, गौतम स्वामीनी सज्जाय. महावीरस्वामीना वे छंदो विगेरे विषयो आवेला छे. किम्मत बार आना. टपाल खर्च वी. पी. साथे त्रण आना.

नित्य नियमनी पोथी. [आवृत्ति पंदरमी.]

आ पोथीमां आनुपूर्वि, अनानुपूर्वि, बार भावना, शियलनी नववाडो, शियलनुं चोढालीयुं, नानी तथा मोटी साधु वंदणा, शिखामणना अट्ठावीश बोल, समकितना ६७ बोल, श्रावकने चिंतववाना त्रण मनोर्थ, सज्जायो तथा वैरागी पद्यो विगेरे घणा विषयो आवेला छे, आ पोथीना उपयोगी पणा विषे आ पोथीनी पंदरमी आवृत्ति छपाइ बहार पडी छे तेज तेनी साबीती छे. जोइए तेमणे मंगाववी. किम्मत चार आना टपाल खर्च अर्धो आनो.

श्री वैराग्य शतक भाषांतर कथाउं साथे.

[आवृत्ती चोथी.]

आ पुस्तकमां घणाज विस्तारथी वार्तारूपे अर्थ अने भावार्थ लखवामां आव्यो छे. प्रसंगे प्रसंगे वैराग्य उपर अतिमुक्त कुमारनी, अढार नात्रानी, वृद्धावस्थाना दुःख उपर धना सार्थवाहनी विगेरे मोटी मोटी ११ कथाओ आवी छे तेथी आ पुस्तक वैराग्य दशाने जागृत करनारा स्त्री पुरुषोने घणुंज उपयोगी थइ पडयुं छे. आ पुस्तकनी टुंक मुदतमां चोथी आवृत्ति थइ छे तेज तेना उपयोगिपणानी विशेष खात्री छे. आ

पुस्तकनी कीमत एक रुपीओ चार आना राखी छे. जोइए तेमणे नीचेना शीरनामे लखवुं. टपाल खर्च वी. पी. साथे त्रण आना.

जैन सूत्रो.

विपाक सूत्र भाषांतर–प्रथम स्कंध–दुःख विपाक जिसमें अशुभ कर्मोके फळ दिखाने वाले दश अध्यनोंका समावेश है. ०–८–०

उपाशक दशांग सूत्र–खंड २ जो भाषांतर. जिसमें धर्मकी उपासना करनेवाले दश श्रावकोका इतिहास दिया है. ०–८–०

उपाशक दशांग सूत्र–खंड त्रीजा भाषांतर श्री निरयावलिका कल्पवडंसिय, पुप्फीआ. पुप्यचुला और त्रिन्हिदशा नामक उपदेशी जैन शास्त्रका सार लिखा गया है. ०–८–०

श्री जैन पाठमाळा.

(आव्रत्ती त्रीजी.)

आ पुस्तकमां प्रस्ताविक गाथाओ सहित श्री पुच्छीसुणं, दशवैकालीक सूत्र मुळ पाठे संपुर्ण, उत्तराध्ययन सूत्र प्रथमथी आठ अध्ययन सुधी अने भक्तामर स्तोत्र कल्याणमंदिर स्तोत्र नमीरायनुं अध्ययन विगेरे विषयो आवेला छे. किम्मत फक्त आठ आना. टपाल खर्च एक आनो.